जनजातीय समाज में मृतक संस्कार

* डा. प्रीति मिश्रा **कु प्रियंका

व्यक्ति की शारीरिक मानसिक तथा बौद्धिक परिकरण के लिए किए जाने वाले अनुष्ठानों को संस्कार कहते हैं। संस्कारों के माध यम से ही एक व्यक्ति समाज का पूर्ण विकसित सदस्य बन जाता हैं। भारतीय संस्कृति में संस्कारों का अत्यधिक महत्व हैं। भारतीय मान्यता के अनुसार जन्म से सभी वर्णो के व्यक्ति समान होते हैं।

भजनना जायते शूद्रः संस्काराद द्विज उच्चयते

अर्थात जन्म से सभी शूद्र होते हैं, संस्कारों को पूरा करने के कारण ही द्विज ;अर्थात ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्यद्ध वर्णो के लोग शूद्रों से श्रेष्ठ हो जाते हैं। संस्कारों का आशय उन अनुष्ठानों से है जो एक हिन्दू को अपने जीवन को पवित्र और परिमार्जित करने की दृष्टि से करने पडते हैं। संस्कार मनुष्य के जीवन में नई स्थितियों के परिचायक हैं। ये मनुष्य के जीवन में आगे आने वाले विभिन्न स्तरों के उत्तरदायित्वों का बोध कराते हुए उसके जीवन को प्रगतिशील व व्यवस्थित करते हैं। वास्तव में धार्मिक आधार पर व्यक्ति के जीवन को परिशुद्ध तथा पवित्र बनाने के उद्वेश्यों से ही संस्कारों का जन्म हुआ है। सभी समाजो में संस्कारों का विशेष महत्व होता हैं। हिन्दू समाज का आवश्यक अंग है पवित्रता व परिशुद्वता इसलिए हिन्दुओ के धार्मिक आधार पर 16 संस्कार निर्धारित हैं।

1. गर्भाधान संस्कार–उत्तम संतान की प्राप्ति के उद्देश्य से संस्कार युक्त रीति से प्रति द्वारा पत्नी में गर्भ स्थापना है भारतीय संस्कृति में संतान उत्पन्न करने और उनका पालन पोषण करने स व्यक्ति पित ऋण से मुक्त होता है तथा समाज की निरंतरता भी बनी रहती है। 2 पुंसवन संस्कार–इसमें पुत्र की प्राप्ति के लिए अनुष्ठान किया जाता हैं। 3 सीमान्तोनयन संस्कार–इस संस्कार का उद्देश्य स्त्री के गर्भ की रक्षा करना होता हैं। 4. जातकर्म–बालक के जन्म के तुरंत बाद वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पिता, बालक को शहद और घी चटाता है। 5. नामकरण संस्कार–जन्म के 10वे 11वे या 12वे दिन पर शिशु की स्वतंत्र पहचान के लिए नामकरण किया जाता हैं। 6. निष्क्रमण संस्कार–जब शिशु को प्रथम बार घर से बाहर निकालना होता है तब यह संस्कार किया जाता है। इसमें पिता बच्चे को सूर्यदर्शन कराता हैं। 7. अन्नप्राशन–मनु के अनुसार छटे मास में अन्नप्राशन कराया जाता है। इसके बाद बालक अन्न का सेवन कर सकता हैं। 8. चूडाकर्म–अन्नप्राशन के बाद चूडाकर्म संस्कार किया जाता हैं। 9. मुण्डनसंस्कार–इसमें जन्म के बाद पहली बार बाल उतारे जाते है। 10. कर्णछेदन–मुण्डन के पश्चात कर्ण छेदन किया जाता हैं। 11. उपनयन संस्कार–उपनयन के अंर्तगत बालक को पुरोहित मंत्रोच्चार द्वारा जनेऊ धारण करवाते है। 12. वेदाध्ययन संस्कार–इस संस्कार में बालक ऋषि अथवा गुरू के पास विद्याध्ययन आरंभ करता हैं। 13. समावर्तन संस्कार–इस संस्कार में बालक वेदाध्ययन करके वापस घर में प्रवेश करता हैं। 14. विवाह संस्कार–जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है क्योंकि इसके बिना व्यक्तिग हस्थाश्रम में प्रवेश नही कर सकता। 15.सन्यास–व्यक्ति सन्यास में समस्त सांसारिक रागद्वेष से उपर उठकर जीवन से मुक्ति अर्थात् शांति भाव से मृत्यु की तैयारी है 16. अन्त्येष्टि या अंतिम संस्कार–मृत्यु के पश्चात मृत आत्मा की शांति की जाती है इसमें पूजा पाठ ब्राम्हणों कुटुम्बियों को दान दिया जाता हैं। यही एक ऐसा संस्कार है जो सालभर चलता हैं। यह सबसे लंबे समय तक चलने वाला संस्कार है क्योंकि एसा प्रतीत होता है कि यह व्यक्ति को दुख की त्रासदी से उबारने के लिए होता है तथा समाज व परिवार इसमें सहयोगी बनता है। हिन्दु मनुष्य का प्रारंभ जीवन एक सादे चित्र की भांती है संस्कारों के माध्यम उसके व्यक्ति को आकर्षक रंगीन सुव्यवस्थित तथा संतुलित चित्र के रुप में परिणित किया जाता है। इसी प्रकार से मुस्लिम समाज में कुछ संस्कारों का उल्लेख किया गया है जिसमें–

1. सतवॉ–स्त्री के गर्भाधान होने के 7वे महिने में विशेष उत्सव मनाया जाता हैं। 2. चिल्ला या अकीका–यह बच्चे के जन्म के 40वे दिन मनाया जाता हैं इस दिन तक माता तथा बच्चा अपवित्र समझे जाते है इस दिन उनका शुद्धिकरण किया जाता है 3. बिस्मिल्लाह–लड़कों का विद्या आरंभ करना बिस्मिल्लाह कहलाता है। 4. खतना–यह संस्कार लडके के 5 से 7 वर्ष के बीच होता है इस संस्कार तक बच्चा शूद्र होता है। इसके बाद बच्चा नमाज पढना व रोजा रखना प्रारंभ करता है। 5. मृत्युसंस्कार–यह जीवन का अंतिम संस्कार हैं। इसके अलावा ईसाइयों में प्रमुख 5 संस्कार होते हैं–

1. बपतिस्मा–इस संस्कार के द्वारा व्यक्ति को पवित्र किया जाता है। 2. धर्म–दीक्षा–इसमें व्यक्ति को ईसाई धर्म दीक्षित किया जाता हैं। 3. आत्म निवेदन व पुष्टिकरण–इस संस्कार के द्वारा व्यक्ति अपने को ईश्वर के शरण में समर्पित करता हैं। 4. पवित्रसंचार–इसमें सामुहिक पूजा या भोग के रूप में संपन्न किया जाता हैं। 5. विवाह संस्कार–ईसाई धर्म में विवाह के महत्व को स्वीकारा गया हैं। यह चर्च में संपन्न होता हैं।

इसी रूप में हम आगे देखते है कि जैन धर्म में भी 8 संस्कार होते है–

1. गर्भावस्था के संस्कार–इसमे माता को अपने गर्भावस्था में नीति नियमों को पालन करने की सलाह दी जाती हैं 2. शैशवावस्था के संस्कार–इसमे माता को अपने बच्चे का ख्याल रखने की सीख दी जाती है इसी में बच्चे का नामकरण किया जाता हैं। 3. बचपन के संस्कार–इस संस्कार में बच्चे के विद्यारंभ व बच्चे को सभ्यता व व्यवहार सिखाया जाता हैं। 4. किशोरावस्था के संस्कार–परोपकार करना सिखाया जाता हैं। 5. यौवनावस्था के संस्कार–इस संस्कार में संयम रखना सिखाया जाता हैं। 6. वृद्धावस्था के संस्कार–इस संस्कार में परोपकार से रहना होता हैं। 7. सल्लेखना के संस्कार–इस संस्कार में त्याग करना सिखाया जाता हैं।

उसी प्रकार से बौद्ध धर्म के अनुसार मानव जीवन में ध ाार्मिक संस्कार का विशेष महत्व हैं। व्यक्ति के अच्छे संस्कार ही उसे महान बनाते हैं। तथा हीन भी गलत संस्कार ही बनाते हैं बौद्ध धर्म में 5 संस्कार होते हैं –

1 नामकरण–जन्म के 5वें दिन के बाद बालक का नामकरण किया जाता हैं। 2 मुण्डन–बालक के जन्म के तीन साल के पहले केश कम्पन्न किया जाता हैं। 3 विद्यारंभ–जन्म के 5वें वर्ष से 7वें वर्ष तक कभी भी बालक का यह संस्कार करवाया जाता हैं। 4 विवाह–गृहस्थ जीवन में प्रवेश हेतु विवाह के बंधन में बाधा जाता हैं। 5 अंतिम संस्कार–व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात अंतिम संस्कार किया जाता हैं।

इसी संबंध में आगे गोंड जनजाति में भी विभिन्न समय में कुछ संस्कार किए जाते हैं। गर्भधारण संस्कार, मुण्डन संस्कार, अंत्ये ठी संस्कार, इनमें से प्रमुख व सभी धर्मो से अलग गोंड जनजाति की उपजातियों में मुरिया व माडिया में म तक संस्कार होता हैं जिसमें मृतक का स्मृतक स्तंभ बनाया जाता हैं। इस संबंध में

* प्राध्यापक शासकीय छत्तीसगढ़ स्वशासी महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
** शोध छात्रा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

बस्तर जिले के डिलमिली व बास्तानार के मुरिया व माडिया जाति के लोगो से साक्षात्कार निर्देशिका के द्वारा साक्षात्कार लिया गया हैं। बस्तर की जनजातियो में कुल तीन प्रकार के मुरिये पाए जाते हैं। राजा मुरिया, घोटुल मुरिया और झोरिया मुरिया। राजामुरिया और घोटुल मुरिया अधिकतर जगदलपुर तहसील में बसे हैं जबकि घोटुल मुरिया और झारिया नारायणपुर और कोडागॉव तहसीलों में बसे हैं परंतु वर्तमान में झोरिया लोग घोटुल मुरिया में विलीन हो चुके है तथा माडिया दो प्रकार के होते है दण्डामी माडिया और अबूझमाडिया, अबूझमाडिया अंतागढ नारायणपुर तहसील में तथा दण्डामी माडिया कोडागांव जगदलपुर बीजापुर दन्तेवाडा तहसील में बसे है।

इन जनजातियों में स्मृतक स्तंभ बनाये जाते है गोंड मुडिया समाज में मृत्युगीत गाने का अदभुत रिवाज हैं। इस संस्कार में मृतक के परिवार के लोग मृतक को हल्दी चंदन लगाकर नहला देते है। शमशान में पुरुष व स्त्री दोनो जाते है। तथा आधे रास्ते से स्त्रिीयॉ लौट आती हैं। और पास के नदी में जाती है श्मशान में गडडा खोदकर उसे गोबर से लीप दिया जाता है। केले के पत्ते बिछाकर मृतक को कपडे से ढक कर मिट्टी से दबा दिया जाता है गडढे मे शराब रखी जाती है तंबाकू की डिब्बी, मृतक के पसंद की वस्तुएं आदि रखी जाती हैं। मान्यता है कि भआत्मा को जब इन चीजो की आवश्यकता होगी तब उसे ये वस्तुएं वही मिल जाये वो हमें तंग न करें भ महिलाएं नदी में जाती है, जिस पुरूष की मृत्यु हुई हैं उसकी पत्नी अपना श्रृंगार का समान उतारकर फैंक देती हैं। तब उसकी बहन या बेटी उसे कपडा देकर पानी से बाहर निकालते हैं तथा नदी के पास बिठाकर सारे लोग उस पर कपडा डालते है। इस रस्म को भरांडकपडा कहा जाता हैं।

नदी से लौटने के बाद भनूनमाटी रस्म होती है इसमें सभी के सिर पर मिट्टी रखकर दातुन दिया जाता हैं और मशान से आये लोग नहाते है। इसके बाद भबिसरानछियाना रस्म होती है इसमें मछली को आग में भूनकर उसे पत्ते से बाँधते है और तेल में डुबाकर, नहाकर आये लोगो पर छिडका जाता हैं।

इसके बाद घर व शमशान में तीन दिन तक दिया जलाया जाता है। पुरूषों का शुद्धि कार्यकम 11 दिन में तथा स्त्री का शुद्धि कार्यकम 9 दिन में किया जाता हैं। पहले दिन भांजे को दान में मृतक की सारी वस्तुएं और मुर्गा, शराब, दाल, चांवल आदि दिया जाता हैं। 3 दिन तक घर में खाना नही बनता हैं। सगे वाले खाना लाते हैं तथा मृतक की याद में चौराहे में खाना रख दिया जाता हैं। 3 दिन बाद भतीज नहानी किया जाता हैं जिसमें भांजा दान के बराबर सामान लाता है तथा सभी सगे वालो को खाना खिलाया जाता हैं जिसमें कुमडा छोडकर सभी चीजे बन सकती है विशे ाकर भबडा नहानी के दिन मद व मांसाहार बनाया जाता हैं। जहॉ पर म तक को गाडा जाता है वहॉ के लोग अपनी हैसियत के अनुसार पत्थर लकडी व सीमेंट के स्म तक स्तंभ बनाते जिसमें मृतक के परिवार के लोग उनको याद कर सके इन स्तंभो में मृतक का नाम जन्म व मृत्यु की तारीख व उसके कुछ स्मृति चिन्ह बनाये जाते हैं इन स्तंभो में पॉच पंछी बनाये जाते थे इनका अर्थ होता है भपॉच पंछी यानि पंचमहाभूत ;आत्माद्ध उड चुकी हैं और शरीर यहॉ छोड दिया हैं।

मृतक को दफनाने के पश्चात् जिन पत्थर को गाडा जाता हैं उसे उर्स कल्फ कहा जाता है। यह एक गोंडी शब्द हैं उर्स का अर्थ है गाडना और कल्फ का अर्थ है पत्थर। उर्स कल्फ अर्थात गडा हुआ पत्थर।

इसके अलावा बीजापुर से 60 किमी दूर इंद्रावती नदी के किनारे कुटरू बेदरे मार्ग पर माड शैली के आकर्षक व अदभुत कब्र या मठ बने है जिन्हे बण्डे कहा जाता हैं। यह कई जगहो पर सामुहिक रूप से दिखाई पडते है आकर्षक बण्डो को देखकर सहसा कोई भी व्यक्ति रूक जाता है। जगह—जगह पर इन बण्डो की खूबसूरती उसके तराशे गए पत्थरो के साथ वनभैंसा के सिंग, कबूतर की आकृति के बीच आकर्षक नजर आती है इन गांवो के आदिवासी ज्यादातर मुरिया जाति के हैं। लेकिन माडिया जाति के प्रभाव में माडिया संस्कृति उनकी जीवन शैली बन चुकी हैं। उसका पट्नम करकेली, आकलंका में सामूहिक बण्डो की अपनी पहचान है। जिसे गांव वाले मृतकों के परिजनो के साथ पत्थरों को तराशकर बनाते हैं। इन्द्रावती नदी के पार पदमेटा की पहाडी व मुरूमवाडा से खास किस्म के पत्थरों को लाकर उसे पारंपरिक औजारों से तराशते हैं व उस पर गौर सिंग व कबूतर व लकडी से निर्मित आकृति बनाकर सजाते व संवारते हैं।

बस्तर संभाग में स्म तक स्तंभ मुख्यतरू मुरिया एवं माडिया गोंड जनजाति स्थापित करते हैं। स्म तक स्तंभ मुख्यतरू बस्तरए नारायणपुर लौहण्डीगुडा दन्तेवाडा बीजापुर मद्देड सुकमा भोपालपटटनम क्षेत्रों में स्थापित किए जाते हैं सामान्यतरू मुरिया गोंड के स्तंभ मारिया गोंड के स्तंभों से छोटे होते हैं एक गोत्र वालो के स्तंभ एक साथ स्थापित किए जाते हैं। मुख्यतरू गोंड जनजातीयों के स्म तक स्तंभो में प्राकृतिक या आधुनिक रंजक द्वारा परंपरागत व आधुनिक कलाकृति बनाई जाती है। बस्तर के गोंड जनजाति मानते है कि मृत्यु के पश्चात आत्मा जीवित रहती है तथा हमारे आसपास रहती है बस्तर संभाग के मुख्य मार्ग के निर्माण कार्यो के कारण कुछ स्मृतक स्तंभ नष्ट हो गए है। तथा वर्तमान में आधुनिकीकरण के चलते स्मृतक स्तंभो एवं संस्कारों में भी परिवर्तन देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एलविन वेरियर — द मुरिया एण्ड देयर घोटुल
2. मुखर्जी रविन्द्रनाथ — भारतीय समाज एवं संस्कृति, विवके प्रकाशन जवाहर नगरदिल्ली 81.86
3. मुखर्जी रविन्द्रनाथ — सामाजिक मानवशास्त्र की रुपरेखाए विवके प्रकाशन जवाहर नगरदिल्ली 481. 488
4. सिंह राम गोयल — भरतीय समाज एवं संस्कृति मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी प . 72.76ए 104.106
5. तिवारी प्रभात कुमार एवं मिश्र उमाशंकर — भारतीय आदिवासी मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी लखनऊ पृ. 202..205

6 जनसत्ता दैनिक समाचार पत्र 30 जून 2008 पृ

धार्मिक पुस्तके

1 संस्कार मंजुशा — जैन धर्म की एक धार्मिक पुस्तक पृ. 44 दृ 46

2 भिक्षु ज्ञान रतन — बौध संस्कार एवं तीर्थ स्मारक बौध धर्म की एक धार्मिक पुस्तक पृ. 21.23